

- आ *beträufeln*: आ नो गव्युत्तिमुत्ततं घृतेन RV. 7, 62, 5. 63, 4. 3, 62, 16.
 — उद् *hinauf* —, *hinaussprengen*: किं तृतीयमेतो दिशमुदीक्षीः ÇAT. Br. 11, 5, 3, 4. 7. 12, 5, 3, 12. KĀTJ. ÇR. 4, 14, 27. ĀÇV. ÇR. 1, 11.
 — उप *hinzusprengen*: अथस्ताडुपोतति ÇAT. Br. 3, 7, 4, 6. KĀTJ. ÇR. 6, 3, 32.
 — निस् *wegsprengen*, *wegsprützen* ÇAT. Br. 11, 5, 3, 5. 7.
 — परि *ringsum besprengen*: आकृवनीयं पर्युह्य KĀTJ. ÇR. 4, 13, 16. 14, 30. ĀÇV. ÇR. 2, 2. KAUC. 53. 58. med.: प्रसव्यमुदकैरात्मनः पर्युत्तते ĀÇV. ÇR. 6, 12. — Vgl. पर्युत्तण.
 — प्र *vor sich hinsprengen*, *besprengen*; *weihen*: तं यत्तं बर्हिषि प्रोत्तन् RV. 10, 90, 7. VS. 1, 13. 2, 1. 3, 25. 6, 9. घृतं प्रोत्तन्ती AV. 10, 9, 11. TS. 5, 2, 5, 6. अद्भर्हिषि प्रोत्तन्ती: — बर्हिः प्रोत्तन्ति मेध्यमेवैनत्करोति 2, 6, 5, 1. ÇAT. Br. 1, 3, 3, 1. 2, 6, 1, 14. 3, 5, 3, 4. KĀTJ. ÇR. 2, 2, 10. 7, 19. 5, 4, 11. 6, 3, 30. ĀÇV. GRHJ. 1, 10. 11. त्रिरेवाग्निं प्रोत्तन्ति त्रिः पर्युत्तति KAUC. 53. सुतम् । मुदाग्नेः प्रोत्तयसि (fut.!) पुनर्मेघरात्रिरेवाचलम् R. 2, 44, 23. प्रोत्तति ÇAT. Br. 4, 2, 1, 13. 14. KĀTJ. ÇR. 9, 10, 3. 5. 12. SUCR. 1, 240, 6. प्रोत्तितं भक्षयेन्मांसम् M. 5, 27. JĀGṆ. 1, 179. durch Besprengung zum Opfertode weihen, schlachten: आरण्यान्सर्वदेवत्यान्मगान्प्राह्य मकृत्वा ने MBh. 1, 4571. प्रोत्तयमाणं पशुं दष्ट्वा यज्ञकर्मण्यथाब्रवीत् । पतिरध्वर्युमासीनो हिंसेयमिति कुत्सपन् ॥ 14, 794. तस्मात्सर्वदेवत्यं प्रोत्तितं प्राजापत्यमालभते BRH. ĀR. UP. 1, 2, 7. R. GORR. 1, 13, 29. 31. 32. 3, 37, 10. प्रोत्तित als Opfer getötet AK. 2, 7, 26. TRIK. 3, 3, 173. — caus. gleichbed. mit dem simpl.: उदकुम्भा-च्चापो गृहीत्वा प्रोत्तयन्नत्कार्क्यं कुर्यात् SUCR. 1, 16, 12. — Vgl. प्रोत्तण und प्रोत्तणी.
 — संप्र *besprengen*: कृविः संप्रोत्तति KAUC. 61. 80. med. sich besprengen: पवित्रैः संप्रोत्तते ebend. प्राणानायम्य संप्रोत्तय JĀGṆ. 1, 24. — Vgl. संप्रोत्तणी.
 — वि *vergiesen*: तां व्यौत्तत् ÇAT. Br. 2, 2, 4, 5. med. überträufeln: येभिः (सिन्धुभिः) परिष्मा परियन्तुरु अयो वि रोहवज्जठरे विश्वमुत्तते RV. 10, 90, 5.
 — अग्निवि *hinsprengen nach*: यथाग्नें नाभिव्युत्तत् ÇAT. Br. 1, 3, 1, 10.
 — सम् *besprengen*, *begiessen*; *ausgiessen*: समुत्तितं सुतं सोमम् RV. 3, 60, 5. इदं ते अन्नं ययुस् समुत्तितं तस्येहि प्र द्रवा पिब 8, 4, 12. वसुतां समुत्तित AV. 5, 28, 4. 7, 73, 2. तेजसा मा समुत्तत् 10, 3, 17. 19, 27, 5. ÇAT. Br. 9, 2, 1, 11. fgg. रुधिरं (शोणितेन) समुत्तितम् MBh. 3, 522. 16422. 4, 790. R. 3, 73, 8. 5, 68, 4. सिकताभिः MBh. 13, 1812. दिव्यगन्धसमुत्तित R. 2, 91, 33. शैरः सरोषाग्निसमुत्तितः MBh. 1, 8255.
 2. उत् (वत्), उत्तति; औत्तम्; ववत्त (NAIGH. 3, 3. Nir. 3, 13), ववत्तैः; *heranwachsen*, *erstarken*: मा न उत्ततमूत् मा न उत्तितम् (वधीः) RV. 1, 114, 7. अभूवौत्तौव्यूः आयुरानद् 10, 27, 7. यैर्भिरेत्तद्वत्त्रकृत्याय वज्री 53, 7. अन्तू-धा यदि जीज्ञन्दधा च नु ववत्त 113, 1. तृषु यदन्ना तृषुणा ववत्त 4, 7, 11. 1. 64, 3. येना नु सव्य औत्तसा ववत्तिय 8, 12, 4. fgg. med. sich stärken, stark werden: स्वरिरमत्रो ववत्तै रणाय 1, 61, 9. कृत्तपर्विरोषधीभिर्ववत्तै 7, 8, 2. (गिरा) ववत्तै ऋषो अस्तुतः 8, 82, 9. ववत्त इन्द्रो अर्भितमृजीषी 4, 16, 5. partic. उत्तितै NAIGH. 3, 3. 1) erwachsen, herangewachsen, erstarkt: दीरेयु कपवः कृतज्ञात उत्तितः RV. 4, 36, 19. त उत्तितसो मर्दिमानमाशत 83, 2. 114, 7. 2, 21, 3. साकं ज्ञाताः सुभूः साकमुत्तिताः 5, 53, 3. 8, 7. — 2) alt geworden: साधयसि सुनता न उत्तिते उषासानक्ता व्ययेव रणिवत् 2, 3, 6.

इन्द्रमजुर्षं इरयत्तमुत्तितं सनायुवानम् 16, 1. — caus. उत्तयते stärken: ते त्वा मदी बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उत्तयत्त युमत्तम् RV. 6, 17, 4.

— अति *übertagen*, *überlegen sein*: न त्वावौ इन्द्र कश्चन न ज्ञातो न ज्ञ-निष्यते अति विश्वं ववत्तिय RV. 1, 81, 5. 102, 8. अति तृष्टं ववत्तियथैव सु-मनो अस्ति 3, 9, 3.

— सम् partic. सम्मुत्तित *gestärkt*, *ermuthigt*: स्तोमैः RV. 5, 56, 5. Könnte auch zu 1. उत्त gehören.

3. उत्त am Ende von comp. s. बृहदुत्त, साकमुत्त.

उत्त = उत्तन् in ज्ञात, मकृत्त, बृहदुत्त und वृद्धात. — adj. gross NAIGH. 3, 3. Vgl. 2. उत्त. — Die Bedeutung gereinigt bei Wils. und im ÇKDr. ohne Angabe einer Autorität beruht vielleicht auf einer falschen Zerlegung von चोत्त in च + उत्त.

उत्तण (von 1. उत्त) n. das Besprengen, Weihen: वसिष्ठमन्त्रोत्तणज्ञातप्र-भावात् (wo मन्त्र als instr. aufzufassen ist) RAH. 5, 27. Vop. 13, 1, v. l.

उत्तण्य (von उत्तन्), उत्तण्यति wie Ukshan thun: व्यं हि वां कृवामहे उत्तण्यतो व्यश्चवत् RV. 8, 26, 9.

उत्तण्ययन (wie eben) patron.: ऋभुमुत्तण्ययने रजतं करयापो (असनाम्) RV. 8, 23, 22.

उत्तण्यु (von उत्तण्य) adj. wie Ukshan thund: व्यश्चस्त्वा वसुविर्दमुत्त-ण्युरप्रीणादधिः RV. 8, 23, 16.

उत्ततर (von उत्तन्) m. wird H. 1238 durch grosser Stier erklärt, bedeu- tet aber nach P. 5, 3, 91 und Vop. 7, 77 vielmehr einen kleinen Stier. Vgl. अश्चतर, ऋभतर, वत्सतर.

उत्तन् (von 1. उत्त) m. Uq. 1, 158 (उँ). acc. उत्तणम् (ved.) und उत्तौ-णम्, उत्तणाम् (ved.) und उत्तणाम्. 1) Stier, Bulle (als Befruchter der Heerde; das fem. dazu ist वशा) AK. 2, 9, 59 (lies: उता भद्रो). H. 1237. उत्तेव यूथा परियन्नरावीत् RV. 9, 71, 9. उता मिमाति प्राते यत्त धेनवः 69, 4. ऋष-भासं उत्तणः 10, 91, 14. 6, 16, 47. AV. 4, 24, 4. गामुत्तणाम् 3, 11, 8. VS. 14, 9. 18, 27. 21, 20. 24, 3. 28, 32. वशाग्निरुत्तभिः (आहुतः) RV. 2, 7, 5. घसत् इन्द्र उत्तणः 10, 86, 13. उद्गाः पंचति 14. Gespann der Ushas 6, 64, 5. 7, 79, 1. — 1, 164, 43. 4, 56, 1. 5, 27, 5. 52, 3. 8, 1, 33. 10, 23, 11. TS. 2, 1, 4, 4. उत्तणं वा वेकृतं वा तदत्ते AIT. Br. 1, 15. KĀTJ. ÇR. 10, 9, 14. 23, 4. 6. MBh. 3, 10379. 13287. 13, 2063. 14, 285. उद्गाः (abl.) KUMĀRAS. 7, 70. उद्गाम् R. 2, 32, 37. AK. 2, 9, 60. astr. der Stier Ind. St. 2, 259. — 2) so heisst: a) als träufelnd, spritzend der Soma: अंशुं उक्त्तपूतणी गिरि-ष्ठाम् RV. 9, 93, 4. 83, 10. उता बिभर्ति भुवनानि वाज्युः 83, 3. 86, 43. 89, 2. 1, 133, 9. die Bereiter des Soma 3, 7, 7. 1, 139, 10. — b) die Marut 1, 64, 2. die Sonne: उता समुद्रो ऋषः सुपर्णाः 5, 47, 3. Agni als der sprühende oder befruchtende 1, 146, 2. 3, 7, 6. 10, 31, 8. 122, 4. andere göttliche Wesen 103, 10. — 3) eine der acht Hauptaraneien (ऋषभ) RĀGṆ. im ÇKDr. — 4) N. pr. eines Mannes, s. उत्तण्य fgg. — Nach NAIGH. 3, 3 ist उता ein m. Krumm; vgl. उत्तित u. 2. उत्त.

उत्तवर्ष (उत्तन् + वश) m. Stierkalb TS. 2, 1, 3. 2. 6. 4, 4. ÇAT. Br. 4, 5, 1, 9.

उत्तवेकृत् (उत्तन् + वे) m. ein zeugungsunfähiger Stier (?) ÇAT. Br. 14, 4, 4, 6.

उत्तौत्र (उत्तन् + अन्न) adj. Stiere verzehrend RV. 8, 43, 11.

उद्गा s. प्युद्गा.